भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-2 /अंक-18/ दिसम्बर-2022

जीवन

भारतीय परम्परा

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष -2/अंक-18/ दिसम्बर-2022

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

For Private Circulation Only

सोशल कनेक्शन

हमसे जुडने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com

paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

दिसम्बर माह

साका कैलेण्डर - 1943 विक्रम संवत - 2078 अयान - दक्षिणायन ऋतु - हेमन्त

सोम		05 मार्ग. शु. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत	12 पौष कृ. चतुर्थी, अंगारकी चतुर्थी	19 पौष कृ. एकादशी, सफला एकादशी व्रत	26 पौष शु. चतुर्थी, विनायक चतुर्थी
मंगल		06 मार्ग. शु. चतुर्दशी	13 पौष कृ. पंचमी	20 पौष कृ. द्वादशी	27 पौष शु. पंचमी
बुध		07 मार्ग. शु. पूर्णिमा, दत्तात्रेय जयंती	14 पौष कृ. षष्ठी	21 पौष कृ. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्री	28 पौष शु. षष्ठी, स्कन्द षष्ठी
गुरू	01 मार्ग. शु. अष्टमी	08 मार्ग. शु. पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत	15 पौष कृ. सप्तमी	22 पौष कृ. चतुर्दशी, साल का सबसे छोटा दिन	29 पौष शु. सप्तमी, गुरु गोविन्द सिंह जयंती
शुक्र	02 मार्ग. शु. दशमी	09 पौष कृ. प्रतिपदा	16 पौष कृ. अष्टमी, धनु संक्रांति, कालाष्टमी	23 पौष कृ. अमावस्या	30 पौष शु. अष्टमी
शनि	03 मार्ग. शु. एकादशी, मोक्षदा एकादशी व्रत	10 पौष कृ. द्वितीया	17 पौष कृ. नवमी	24 पौष शु. प्रतिपदा	31 पौष शु. नवमी
रवि	04 मार्ग. शु. द्वादशी, मत्स्य द्वादशी	11 पौष कृ. तृतीया	18 पौष कृ. दशमी	25 पौष शु. द्वितीया, क्रिसमस	

मा. - मार्गशीर्ष कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

मोक्षदा एकादशी

मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी **मोक्षदा एकादशी** कहलाती हैं। इस व्रत के प्रभाव से पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस दिन श्री कृष्ण व गीता का पूजन शुभ फलदायक होता है। भोजन कराकर दान आदि कार्य करने से विशेष फल प्राप्त होते है। **मोक्ष का अर्थ है "मोह का त्याग"।** इसलिए यह एकादशी मोक्षदा के नाम से भी जानी जाती है। इस दिन भगवान श्री विष्णु की धूप, दीप नैवेद्य आदि से भक्ति पूर्वक पूजा करनी चाहिए।

मोक्षदा एकादशी का संबंध महाभारत से भी जुड़ा है। पौराणिक मान्यता के अनुसार, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि को ही भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। महाभारत युद्ध के दौरान जब अर्जुन अपने सगे संबंधियों पर बाण चलाने से झिझक रहे थे तब द्वारिकाधीश श्रीकृष्ण ने उन्हें गीता का सार भी इसी दिन समझाया था। इसलिए इस दिन **"गीता जयंती"** का पर्व भी मनाया जाता है।

मोक्षदा एकादशी कथा –

अर्जुन ने उत्पन्ना एकादशी की महिमा एवं महत्व आदि सुनकर प्रभु दामोदर से कहा- हे प्रभु! आपने मार्गशीर्ष माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी के विषय में बताया है, उससे मुझे बड़ी ही शांति प्राप्त हुई। अब कृपा करके मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष में जो एकादशी पड़ती है उसके विषय में भी बताने की कृपा करें। उसका नाम क्या है? उस दिन कौन-से देवी-देवता की पूजा की जाती है और उस पूजा की विधि क्या है? और यह व्रत करने से मनुष्यों को क्या फल मिलता है? प्रभु! मेरे इन प्रश्नों का विस्तार सहित उत्तर देकर मेरी जिज्ञासा को दूर कीजिए, आपकी बड़ी कृपा होगी।

अर्जुन की जिज्ञासा सुन श्रीकृष्ण बोले- हे अर्जुन! तुमने बहुत ही श्रेष्ठ प्रश्न किया है, इसलिए तुम्हारा यश संसार में फैलेगा। मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी अनेक पापों को नष्ट करने वाली है। संसार में इसे मोक्षदा एकादशी के नाम से जाना जाता है। इस एकादशी के दिन श्री दामोदर भगवान का धूप, दीप, नैवेद्य आदि से भक्तिपूर्वक पूजन करना चाहिए। हे कुंती पुत्र! इस एकादशी व्रत के प्रभाव से नरक में गए हुए माता, पिता, पितर आदि को स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

कथा –

वैखानस नाम का एक राजा प्राचीन नगर में राज करता था। उसके राज्य में चारों वेदों के ज्ञाता ब्राह्मण रहते थे। राजा अपनी प्रजा का पुत्रवत् पालन किया करता था। एक रात्रि को स्वप्न में राजा ने अपने पिता को नरक की यातनाएं भोगते देखा, इस प्रकार का स्वप्न देखकर राजा बड़ा ही व्याकुल हुआ। उसने ब्राह्मणों को बुलाकर उनके समक्ष अपने स्वप्न की बात बताई- हे ब्राह्मणों! रात्रि को स्वप्न में मैंने अपने पिता को नरक की यातनाएं भोगते देखा।

उन्होंने मुझसे कहा है कि हे पुत्र! मैं घोर नरक भोग रहा हूँ। मेरी यहां से मुक्ति कराओ। जब से मैंने उनसे यह वचन सुने हैं, तब से मुझे चैन नहीं है। मुझे अब राज्य, सुख, ऐश्वर्य, हाथी-घोड़े, धन, स्त्री, पुत्र आदि कुछ भी सुखदायक प्रतीत नहीं हो रहे हैं। अब मैं क्या करूं? कहां जाऊं? कृपया करके आप लोग मुझे कोई ऐसा तप, दान, व्रत आदि के बारे में बताएं, जिससे मेरे पिता को मुक्ति की प्राप्ति हो। राजा के आंतरिक दुख की पीड़ा को सुनकर ब्राह्मणों ने आपस में विचार-विमर्श किया, फिर बोले- राजन! वर्तमान, भूत और भविष्य के ज्ञाता पर्वत नाम के एक मुनि हैं। वे अवश्य ही इसका कोई सरल उपाय आपको बता देंगे।

ब्राह्मणों की बात मान राजा मुनि के आश्रम पर गए। आश्रम में अनेक शांतचित्त योगी और मुनि तपस्या कर रहे थे। चारों वेदों के ज्ञाता पर्वत मुनि दूसरे ब्रह्मा के समान बैठे जान पड़ रहे थे। राजा ने उन्हें दण्डवत प्रणाम किया तथा देखे गए स्वप्न की पूरी बात बताई और बोला- हे महर्षि! कृपया आप मेरा मार्गदर्शन करें कि ऐसे में मुझे क्या करना चाहिए और किस प्रकार से मैं अपने पिता को नरक की यातना से मुक्ति दिलाऊं?

राजा की सम्पूर्ण व्यथा को पर्वत मुनि ने गम्भीरतापूर्वक सुना, उन्होंने कहा - प्रिय राजन! मैंने अपने ध्यान शक्ति के द्वारा आपके पिता जी के सभी कुकर्मों के बारे में जानकारी प्राप्त कर ली है। उन्होंने पूर्व जन्म में अपनी पत्नियों के साथ बहुत भेदभाव किया था। उसी के कारण आपके पिता नरक में गया है। यह जानकर वैखानस बहुत दुखी हुआ और बड़े याचना भरे स्वर में कहा - हे ऋषिवर! मेरे पिता के उद्धार का आप कोई मार्ग बताने की कृपा करें, किस प्रकार से वह इस पाप से मुक्त हो सकेगे?

पर्वत मुनि बोले - **हे राजन! मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष में जो मोक्षदा एकादशी आती है, जो मोक्ष प्रदान करने वाली होती है। आप इस मोक्षदा एकादशी पर व्रत करें और उस व्रत के पुण्य को अपने पिता को अर्पित कर दें। एकादशी के पुण्य प्रभाव से अवश्य ही आपके पिता की मुक्ति हो जाएगी।**

पर्वत मुनि से आशीर्वाद लेकर राजा अपने राज्य को लौट आया और परिवार सहित मोक्षदा एकादशी का विधि पूर्वक व्रत किया। इस व्रत के पुण्य को राजन ने अपने पिता को समर्पित किया। इस पुण्य के प्रभाव से उनके पिता को मुक्ति मिल गई।

जो लोग मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी का उपवास करते हैं, उनके सभी बुरे कर्म नष्ट हो जाते हैं और अंत में उन्हें स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती हैं। इस उपवास से उत्तम और मोक्ष प्रदान करने वाला कोई भी दूसरा व्रत नहीं है। इस कथा को सुनने व पढ़ने से अनंत फल प्राप्त होता है। यह उपवास मोक्ष प्रदान करने वाला चिंतामणि के समान है। जिससे उपवास करने वाले की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। इसका उपवास केवल उपवास करने वाले मनुष्य का ही नहीं, अपितु उसके पितरों का भी भला करता है।

व्रत विधि –

- इस दिन भगवान विष्णु, **श्री गणेश एवं गीता ग्रंथ की पूजा की जाती है।**

- एकादशी व्रत करने वाले व्रती को दसवीं वाले दिन सूर्यास्त के बाद सात्विक भोजन करना चाहिए और चावल का सेवन नहीं करना चाहिए।

- एकादशी वाले दिन प्रातःकाल स्नान के पश्चात विष्णु भगवान का पूजन करना चाहिए।

- भगवान विष्णु को धूप, दीप, नैवेद्य, तुलसी पत्र, पीले पुष्प और पीले वस्त्र अर्पित करने चाहिए। इस दिन भगवान विष्णु को तुलसी पत्ता चढ़ाने का विशेष महत्व है।

- गाय के शुद्ध घी का दीपक जलाएं एवं प्रभु को माखन-मिश्री का भोग लगाएं।

- इसके बाद तुलसी की माला से निम्न मंत्र का जाप करें। कम से कम 5 माला जाप करें **"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नम:"**। मंत्र जाप करने से घर में सुख-समृद्धि बनी रहती है।

- पूजा करते समय कुशा के आसन का उपयोग करें तो बेहतर रहता है।

- इस व्रत में रात्रि जागरण का विशेष महत्व माना गया है।

- द्वादशी के दिन किसी ब्राह्मण को भोजन कराने के पश्चात व्रत का पारणा करना चाहिए।

- रूचि गोस्वामी जी, बीकानेर (राजस्थान)

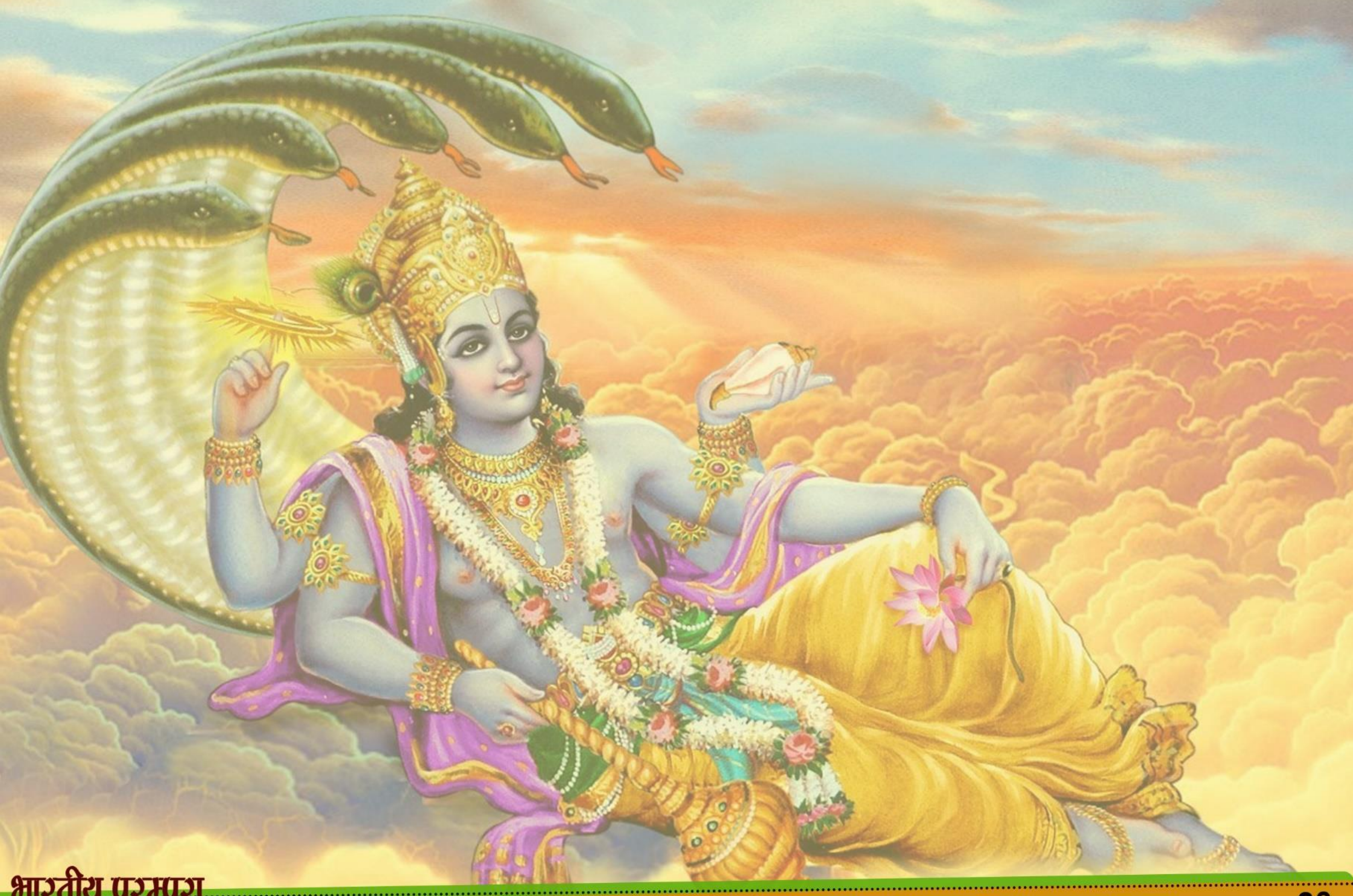

अगर आप अपने

‘शब्दों के मोती’

भारतीय परम्परा की माला में पिरोना

चाहते है तो हमें सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट

पर भी प्रकाशित किया जायेगा

paramparabhartiya@gmail.com

WHITE BERRY
RESIDENCY
LUXURY
HOMES
1 BHK & 2 BHK
JODI FLAT
(3.5 & 4.5)
NEAR
POSSESSION
Google Location
QR Code:
www.whiteberryresidency.com
98705 80810, 85913 69996
Asha Nagar, Thakur Complex, Kandivali (E), Mumbai.

GAATHBANDHAN
Kings weds Queens
HER
and
HIM
Sample Text Sample Text
Wedding
+91 7303021123
www.kingsuedsqueens.com
PAPER - LESS
&
SHIPPING - FREE
WEDDING
INVITATION
Call Us

त्रिदेवमयस्वरुप भगवान दत्तात्रेय

पौराणिक कथानुसार ब्रह्माजी के मानस पुत्र सप्त ऋषियों में से एक महर्षि अत्रि व प्रजापति कर्दम ऋषि की पुत्री और सांख्य शास्त्र के प्रवर्तक कपिल देव की भगिनी सती अनुसूया के यहां त्रिदेवों के अंश से तीन पुत्र सबसे पहले **ऋषि दुर्वासा**, फिर **चन्द्रदेव** उसके बाद **दत्तात्रेय** ने जन्म लिया।

चूंकि **भगवान दत्तात्रेय को शैवपंथी प्रभु शिव का अवतार तो वैष्णव पंथी प्रभु विष्णु का अंशावतार मानते हैं** और सती अनुसूया की पति-भक्ति के कारण उनकी सतियों की गणना में सबसे पहले होती है इसलिये कुछ लोगों का यह स्वाभाविक प्रश्न हो जाता है कि फिर ये उनके पुत्र कैसे हुये। इसलिए इस जिज्ञासा के समाधान हेतु उस घटना से आप सभी को अवगत करा रहा हूं जिसके चलते उनका जन्म सती अनुसूया के गर्भ से हुआ।

वह घटना इस प्रकार है -
एक बार ब्रह्माणी, विष्णूवक्षा व गौरी में यह जानने की प्रबल इच्छा जागी कि सर्वश्रेष्ठ पतिव्रता कौन है? जब यह निर्णय हो गया कि महर्षि अत्रि पत्नी अनुसूया इस समय न केवल सर्वश्रेष्ठ पतिव्रता है बल्कि सतियों की गणना में भी वे पहले स्थान पर हैं तब इन तीनों ने अपने अपने स्वामियों से भूलोक जा कर पतिव्रता अनुसूया की परीक्षा लेने का आग्रह किया। इस आग्रह के परिणामस्वरूप तीनों देव अर्थात ब्रह्मा, विष्णु व महेश ब्राह्मण वेश धारण कर महर्षि अत्रि के आश्रम उस समय पहुंचे जब महर्षि आश्रम के बाहर कहीं गए हुए थे।

सती अनुसूया ने उनका यथोचित सत्कार किया और पधारने वास्ते आभार भी प्रकट किया। तत्पश्चात तीनों ने भिक्षा की मांग तो की, सो तो ठीक, लेकिन एक शर्त भी लगा दी जिसके अनुसार सती को एकदम नग्न हो कर भिक्षा देनी थी अन्यथा वे भिक्षा नहीं लेंगे। इनकी शर्त जान सती धर्मसंकट में उलझ गईं लेकिन फिर थोड़ा संभलकर उन्होंने मंत्र का जाप कर अभिमंत्रित जल को उन तीनों ब्राह्मण वेश धारण किये त्रिदेवों पर डाल दिया। अभिमंत्रित जल के छीटों से तीनों तुरंत प्रभाव में छोटे छोटे बालक अर्थात शिशु रूप में बदल, सती अनुसूया के गोद में खेलने लगे। इस तरह तीनों को शिशु रूप में पा सती ने तीनों को स्तनपान करा भिक्षा वाली बात पूरी की।

इसी बीच एक तरफ तो महर्षि आश्रम लौट, जब यह सब नजारा देखा तब अपनी आंखें

बंद कर तपबल से सारी परिस्थिति से अवगत हो गये और दुसरी तरफ जब ये तीनों देव वापस स्वर्ग नहीं लौटे तो माता सरस्वती जी के साथ साथ माता लक्ष्मी जी व माता पार्वती जी चिंतित हो, तीनों सती अनुसूया के पास पहूंची। उन तीनों ने वहां जब सारी हकीकत देखी तब बिना किसी भी प्रकार के संकोच किये सती से अपने अपने स्वामियों को वापस कर देने का आदरपूर्वक आग्रह किया।

सती अनुसूया व महर्षि अत्रि ने उनका आग्रह स्वीकारते हुए विनम्रतापूर्वक यह आग्रह कर निवेदन कर दिया कि जब इन त्रिदेवों को सती ने स्तनपान कराया है तब इन्हें किसी न किसी रूप में हमारे साथ रहना पड़ेगा। तत्पश्चात उन त्रिदेवों ने उनके आग्रह को स्वीकारते हुए सती के गर्भ में दुर्वासा, चन्द्र देव व दत्तात्रेय के रूप में अपने अवतारों को स्थापित कर दिया। लेकिन जब सती अनुसूया ने दुर्वासा को जन्म देने के पश्चात चन्द्र देव को भी जन्म दे दिया लेकिन जब तीसरे शिशु का जन्म न हो पाया और सती को प्रसव पीड़ा होती रही तब ब्रह्मदेव व शिवजी को सारी बात समझ में आ गयी तब उन लोगों ने फिर अपने अपने कुछ अंश भेजें जिसके चलते भगवान दत्तात्रेय गर्भ में ही तीन सिर और छः भुजा हो गयी। **भगवान दत्तात्रेय मार्गशीर्ष की पूर्णिमा को जन्मे। यही कारण है जिसके चलते भगवान दत्तात्रेय ब्रह्मा-विष्णु-महेश के अवतार माने जाते हैं।**

भगवान दत्तात्रेय जी का यह दृढ़ विश्वास था कि जिससे भी ज्ञान, विवेक व किसी भी प्रकार की कोई भी शिक्षा मिले वह ग्रहण करें भले ही वह पशु-पक्षी हो या प्रकृति का कोई भी अंश। यही कारण था जिसके चलते उन्होंने **१) पृथ्वी २) जल ३) वायु ४) अग्नि ५) आकाश ६) सूर्य ७) चन्द्रमा ८) समुद्र ९) अजगर १०) कपोत ११) पतंगा १२) मछली १३) हिरण १४) हाथी १५) मधुमक्खी १६) शहद निकालने वाला १७) कुरर पक्षी १८) कुमारी कन्या १९) सर्प २०) बालक २१) पिंगला वैश्या २२) बाण बनाने वाला २३) मकड़ी २४) भृंगी कीट** वगैरह का अध्ययन कर जो कुछ इनसे सीखा उसको अपने जीवन में ही नहीं उतारा बल्कि इन चौबीसों को गुरु बना लिया।

आप सभी के ध्यानार्थ भगवान दत्तात्रेय जी की कृपा से गुरु गोरखनाथ जी को आसन, प्राणायाम, योग वगैरह का ज्ञान प्राप्त हुआ। इसी तरह भक्त प्रह्लाद को अनासक्ति-योग का उपदेश दिया। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने परशुरामजी को श्री-विद्या मंत्र प्रदान किया था और शिवपुत्र कार्तिकेय को भी अनेक विद्याओं प्रदान की थीं।

भगवान दत्तात्रेय जी आजन्म ब्रह्मचारी, अवधूत और दिगम्बर रहे थे। इनकी आराधना से बहुत ही जल्दी सफलता प्राप्त हो जाती है। भगवान दत्तात्रेय को सही तरीके से सभ्य जीवन जीने व व्यक्तियों का मार्गदर्शन करने के लिए जाना जाता है।

- गोवर्धन दास बिन्नाणी जी, "राजा बाबू", बीकानेर (राजस्थान)

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
नियमित प्राप्त करने हेतु हमें सम्पर्क करें!

- व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

- भारतीय परम्परा ई-पत्रिका के लिए दिए गए नंबर **73030 21123** को मोबाइल में सेव करें और व्हाट्सप्प एवं टेलीग्राम के ग्रुप से जुड़े।

- ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुए है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।

- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

- **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर करायें।

हा त्राहिमाम! हा त्राहिमाम! हा त्राहिमाम! की सुन पुकार।
क्रन्दन कर उठा हृदय कवि का, शिशुओं का सुनकर चीत्कार।।
ख़ाकीन कर दिया पतनों ने, दे दी पछाड़ उत्थानों को।।
आ रहा पसीना पथरीली, कांपती हुई चट्टानों को।
हिल उठे कलेजे शिखरों के, घाटियाँ सिकुड़ कर चीख उठीं।
मौतें हो उठीं मुखर मौनी, लाशों पर नर्तन सीख उठीं।।
आ गया ज्वार उन लहरों में, जो कभी आज तक उठीं न थीं।
गूँथ गईं युद्ध में वे कड़ियाँ, जो एक सूत में गठीं न थीं।।
लग रहा अधकटे रुण्डों की, कर उठी भैरवी खेती हो।
या मुण्डमाल के लिए पुनः, काली रण चण्डी चेती हो।।
या महाकाल की खुली आँख, तीसरी ध्वंस की बेला है।
या स्वयं काल भैरव ने आ, जग को इस ओर धकेला है।।
धरती की छाती छेद उठे, धरती पर बने बनाए बम।
दहला दी दुनिया दहशत से, हो रही बमों की बम बम बम।।
टी वी की छाती से निकले, परिदृश्य दिखाई देते हैं।
कुछ सत्य और कुछ भ्रमकारी, सन्देश सुनाई देते हैं।।
इस ओर विवश यूक्रेन खड़ा, उस ओर रूस की दमदारी।
इस ओर गुरिल्ला वारों से, उस ओर दनादन बमबारी।।
इस ओर कराहें दबी दबी, उस ओर गर्जना गर्वीली।
इस ओर आह तक पीली है, उस ओर वाह तक रौबीली।।
इस ओर चतुर्मुख धुआँ धुआँ, उस ओर फूटते फव्वारे।
इस ओर जी उठा ध्वंस राग, उस ओर नृत्य द्वारे द्वारे।।
इस ओर ध्वस्त हो गया सृजन, उस ओर अहम् है मस्तक पर।
इस ओर भुखमरी पेटों की, उस ओर दम्भ है दस्तक पर।।
इस ओर थम गई किलकारी, उस ओर लग रहे अट्टहास।
इस ओर झर चुके पारिजात, उस ओर सुर्ख होता पलास।।
क्या नई भूख के प्यासों को, पानी न मिला पाताल तलक।
जो मांस चबा पी उठे खून, छोड़ी न नरों में खाल तलक।।
आखिर किसने जीवंत देश, श्मशान बना कर छोड़ दिया।
किसने मदमाते सिंहों के, सामने मेमना मोड़ दिया।।
किसके बल पर यह मेष पुत्र, किसकी बातों में बहक गया।
वे कहाँ गए हित के रक्षक, जिनके कारण सब दहक गया।।
सबसे ताकत वर मैं ही हूँ, बस यही सिद्ध कर पाने को।
हिंसक पशुओं में सदा युद्ध, होते हैं भूख मिटाने को।
मानव मानव को मारेगा, जग को विनाश समझायेगा?
जंगली सभ्यता पनपेगी, क्या यह विकास कहलायेगा??
जिस मानवता की जड़ें त्याग, सहयोग दया पर जमी रहीं।
वीरता विनय के साथ क्षमा, की भाव भूमि पर टिकी रहीं।।

स्वेदज उद्भिज जड़ जंगम की, रक्षा की जिम्मेदारी थी।।
असहाय लगा वह नरपुंगव, नैतिकता नीति विहीन लगी।
हो उठी बली फिर दानवता, ऐसी मानवता दीन लगी।।
रो रही धरा रो रहा गगन, रो उठा नर्क का द्वार द्वार।
आँखों से झरने फूट पड़े, हा-हा खा-खा कर बार बार।।
रोको रोको यह महायुद्ध, यह महानाश का कारण है।
यह द्वन्द्व नहीं है बातों का, यह प्रलय भयंकर भीषण है।।
यदि रोक न पाए महानाश युग को कलंक लग जायेगा।
इस धवल कीर्ति की काया पर, मल भरा पंक लग जायेगा।।
गिर पड़ी कहीं बारूदों के, ढेरों पर जीती चिनगारी।
स्वाहा कर देगी सकल सृष्टि, बदला लेने की जीदारी।।
फिर कौन बचेगा महफ़िल में, क्या प्राण बिना तन डोलेंगे ?
कोयलें कहाँ पर कूकेंगीं, किस तरह पपीहे बोलेंगे ?
बेला गुलाब रजनीगन्धा, चम्पा कनेर मिट जायेंगे?
होगी दुर्गन्धित दिशा दिशा, क्या सभी पुष्प मर जायेंगे ?
पेड़ों से लिपटी वल्लरियाँ, कोपलें उमगती शाखों से।
हर ओर चटकती कली कली, क्या देख सकोगे आँखों से ?
ये खिले बगीचे रंग भवन, रम्भा सी इठलाती परियाँ।
मद भरी जवानी तरुणों की, मद बिन मदिराती सुन्दरियाँ।।
क्या रूप रूठ कर बैठेगा, क्या रंग मनाने आयेगा ?
क्या किलक सकेगी किलकारी, क्या जीवन राग सुनायेगा ?
वह बनक ठनक प्रेमानुराग, रुतबा रुआब किसका होगा ?
फिर कौन करेगा प्रश्न यहाँ, कैसा जवाब किसका होगा ?
क्या मौत ठहाके मार मार, जीवन को और चिढ़ायेगी ?
कटुता क्या इतनी कटु होगी, करुणा को मार भगायेगी ?
लहराती नदियों की कल कल, फिर कौन सुनेगा दुनिया में ?
झरनों से झरते सपनों को, फिर कौन बुनेगा दुनिया में ?
क्या कमी आज आ गई कहो, सोचो समझो फिर तो तय हो।
हो किसी तरह यह युद्ध बन्द, हर ओर शान्ति का निर्णय हो।।
हाँ वही शान्ति जो जीवन में, जीवन का मूल्य बताती है।
हाँ वही शान्ति निष्प्राणों में, जो प्राणी भाव जगाती है।।
आती आंधी हो शमित दमित, हों शान्त अग्नि चारों आकर।
हो धरा गगन जल शान्त पवन, भूकम्प मेघ नदियाँ सागर।।
ज्वाला मुख गिरि हों शान्त शान्त, नग शान्त शक्तियाँ औषधियाँ।
मन के विकार हों शान्त शान्त, ब्रह्माण्ड खण्ड बहती नदियाँ।।
ॐ शान्तिः।।ॐ शान्तिः।।ॐ शान्तिः।।

- गिरेन्द्र सिंह भदौरिया जी "प्राण" इन्दौर (म.प्र.)

जीवन एक संसार

जीवन बांसुरी के समान है
जिसमे बाधाओं रुपी
कितने भी छेद क्यों न हो
जिसको उसे बजाना आ
गया उसे जीवन जीना
आ गया..!!

जीवन में त्याग के बिना
कुछ भी पाना संभव नहीं
है क्योंकि हमें सांस लेने
के लिए भी पहले सांस
को छोडना पडता है.!!

इस संसार का सबसे
अच्छा गहना 'परिश्रम' है
और सबसे अच्छा
जीवनसाथी हमारा
'आत्मविश्वास' है..!!

'पछतावा' अतीत नहीं
बदल सकता और
'चिंता' भविष्य नहीं सुधार
सकती, इसलिए
आज क़ा जीवन जीओ
वही सच्चा सुख है..!!

स्त्रियां वो है जो अपना
पूरा जीवन एक नापसंद
इंसान के साथ बीता देती है,
वो भी इसलिए कि मां-बाप
को कोई तकलीफ न हो..!!

घमंड के लिए नहीं
लेकिन कभी-कभ़ी
आत्मसम्मान के लिए
जीवन में कुछ लोगों का
साथ छोडना पडता है..!!

'सदाचार' पथ नहीं छोड़ना, नहीं छोड़ना...

'सेवा' अवसर हाथों से जाने मत देना।
तन-मन से कष्ट किसी को पाने मत देना।
इस बेला में आलस को आने मत देना।
आगा-पीछा नहीं सोचना, नहीं सोचना...
'सदाचार' पथ नहीं छोड़ना, नहीं छोड़ना...

'सदगुण' को निशिदिन कर लेना धारण सच में।
मिल गया मार्ग तो कर लेना पारण सच में।
किया नहीं किया मित्र! कोई कारण सच में।
द्वेष अकारण नहीं घोलना, नहीं घोलना...
'सदाचार' पथ नहीं छोड़ना, नहीं छोड़ना...

'सत्कार' प्रेम हर दिल को कर देता नम है।
मीठी वाणी से आपस में मिटता तम है।
कहा बड़ों का घर आया माँ जाया सम है।
बिना नेह कुछ नहीं शोभना, नहीं शोभना...
'सदाचार' पथ नहीं छोड़ना, नहीं छोड़ना...

'सन्तोष' उसी में अपने भाग्य का पा लिया।
जो मिला परस्पर उसे बांटकर खा लिया।
देखो बिना साज के नाम हरि का गा लिया।
और सहारा नहीं खोजना, नहीं खोजना...
'सदाचार' पथ नहीं छोड़ना, नहीं छोड़ना...

'सरलता' फले कुटिलता टले नई भोर से।
वो सहज सुगम सबको मिलता कहाँ जोर से।
लो, आप और हम बंधे प्रीत की डोर से।
रंग दूसरा नहीं पोतना, नहीं पोतना...
'सदाचार' पथ नहीं छोड़ना, नहीं छोड़ना...

- द्वारका प्रसाद तापड़िया जी, जयपुर (राजस्थान)

मां उड़ना सिखला दो

मां उड़ना सिखला दो

अपने नन्हे बच्चों से
बोली गौरैया रानी।
दाने चुग झरने का निर्मल
पी लो मीठा पानी ।।

एक साथ बच्चे मिल बोले
ये दुनिया दिखला दो।
दूर उड़ेंगे नीलगगन में
मां उड़ना सिखला दो ।।

हम भी देखें दुनिया कितनी
लंबी और बड़ी है।
कौन-कौन सी चीजें इसमें
कितनी भरी पड़ी हैं ।।

बड़े प्यार से पर सहलाकर
चिड़िया थी मुस्काई।
समय-समय पर सब सीखोगे
बात उन्हें समझाए ।।

- श्याम सुन्दर श्रीवास्तव जी 'कोमल', लहार (म०प्र०)

भगवान श्री राम अपनी पत्नी सीता मैया और भ्राता लक्ष्मण के साथ जंगल में पंचवटी वाटिका बना कर रहे थे। पंचवटी बनाकर उसमें रहने से चमत्कारी लाभ प्राप्त होते हैं।

"मूल ब्रह्मा, त्वचा विष्णु,शाखा रुद्र महेश्वर:।
पत्रे पत्रे तु देवानाम वृक्ष राजो नमोस्तुते "।।

अर्थात्- वृक्षों के मूल में ब्रह्मा है, तने में विष्णु, शाखाओं में रुद्र, शिव है, तो पत्तों में अन्य देवता निवास करते हैं अतः हे वृक्षराज आपको नमस्कार है।

पंचवटी का तात्पर्य - पंच यानी पांच और वट यानि वृक्ष। ये पांच विशेष प्रकार के वृक्ष जिस स्थान पर लगाए जाते हैं उसे ही पंचवटी कहते हैं।
ये पांच वृक्ष निम्न हैं - **पीपल, बेलपत्र, बड़, आंवला एवं अशोक।**

इन पांचों वृक्षों को एक विशेष दिशा एवं दूरी पर लगाया जाना चाहिए।
पंचवटी का महत्व स्कंद पुराण में वर्णित है। इसकी संरचना में आयुर्वेद, मनोविज्ञान, औघोगिक, वास्तुशास्त्र एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए उपयोग होता है। इन पांचों वृक्षों के अलावा हर प्रकार के वृक्ष और पौधे को उसकी सकारात्मक दिशा में लगाकर उससे उस स्थान की नकारात्मक ऊर्जा, धन संबंधी समस्या, रोग निवारण, बच्चों की पढ़ाई एवं परिवार के सभी सदस्यों के बीच प्रेम रहे, सभी प्रकार से सकारात्मक परिणाम प्राप्त कर सकते हैं ।

पांचों वृक्षों का महत्व -
इन पांचों वृक्षों में बहुत औषधिय गुण, धार्मिक महत्व, पर्यावरण के लिए महत्त्व होते हैं। इनके अंतर्गत वो सभी गुण पाए जाते हैं, जिनसे मनुष्य दीर्घायु रहकर अपने समस्त रोगों से निजात पा सकता है।

आंवला - आंवले को आयुर्वेद में अमृत फल कहा गया है। **पेड़ पौधों से जो औषधि बनती है, उसको काष्ठोषधि कहते हैं और धातु खनिज से जो औषधि बनती है उसको रसौषधि कहते हैं।** इन दोनों तरह की औषधि में आंवले का इस्तेमाल किया जाता है, यहां तक कि आंवले को रसायन द्रव्यो में भी सबसे अच्छा माना गया है, जिसका प्रभाव बालों के ऊपर देखने को मिलता है, इसका प्रयोग बालों पर करने से रूखे बाल काले, घने और चमकदार हो जाते हैं। चरक संहिता में १०० रोगो के लिए एक दवा बताई गई है, वो है आंवला। आंवला विटामिन सी का सबसे अच्छा स्त्रोत है, एवं शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। आंखों के लिए, बालों के लिए, त्रिदोष, कब्ज, मूत्र विकार इनके अलावा अन्य रोगो में भी आंवले के बहुत फायदे हैं।

पीपल - **पद्मपुराण में पीपल वृक्ष को भगवान विष्णु का रूप माना गया है। इस वृक्ष को दैवीय पेड़ के रूप में माना गया है। सोमवती अमावस्या के दिन पीपल के वृक्ष में भगवान विष्णु और माँ लक्ष्मी का वास होता है।** पीपल में पितरों का निवास भी माना गया है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार अगर किसी को शनि की साढ़ेसाती चल रही हो तो हर शनिवार पीपल वृक्ष में जल अर्पित करके उसकी सात बार परिक्रमा लगाने से लाभ होता है। इसके साथ ही शाम के समय पीपल के पेड़ की जड़ में दीपक जलाना भी लाभप्रद होता है। पीपल रक्त विकार दूर करने वाला वेदनाशमक करता है। पीपल एक ऐसा वृक्ष है जिसमें से प्राणवायु आक्सीजन के साथ साथ ओज़ोन गैस भी निकलती है, यह ओज़ोन गैस औरतों की प्रजनन शक्ति को बढ़ाकर ताकतवर बच्चे पैदा करने की शक्ति प्रदान करती है। इसके अलावा भी कई रोगो में पीपल की जड़ और पत्तों का उपयोग किया जाता है, जैसे सांस संबंधी, त्वचा संबंधी आदि।

बेलपत्र - **बेलपत्र के वृक्ष पर भगवान शंकर का निवास माना गया है। बेलपत्र पेट और शरीर की गर्मी को शांत करता है।** बेल की पत्तियों, काष्ठ एवं फल में तेल ग्रंथिया होती है जो वातावरण को सुगंधित करती है। इस वृक्ष को लगाने से माँ लक्ष्मी जी भी बहुत प्रसन्न होती हैं, और जातक को वैभवशाली बनाती है। बेल फल में कैल्शियम, फास्फोरस, फाइबर, प्रोटीन और आयरन जैसे तत्व पाए जाते हैं, वहीं बेलपत्र में भी प्रोटीन, थायमीन, विटामिन बी, विटामिन ए और बीटा कैरोटीन जैसे तत्व पाए जाते हैं। इसके उपयोग से त्वचा संबंधी समस्याओं सहित और भी कई रोगो में निजात पाया जा सकता है।

अशोक - हिन्दू धर्म में यह एक पवित्र, लाभकारी और मनोरथ पूर्ण करने वाला वृक्ष है। **इस वृक्ष पर लक्ष्मी जी का निवास माना गया है।** अशोक का अर्थ है- किसी भी प्रकार का शोक न होना। माँगलिक और धार्मिक कार्यों में इसके पत्तों का प्रयोग किया जाता है। इस वृक्ष पर प्राकृतिक शक्तियों का विशेष प्रभाव रहता है, जिसके कारण यह वृक्ष जहां लगा होता है, वहां पर सभी कार्य पूर्णतः निर्बाध रूप से सम्पन्न हो जाते हैं। स्त्री विकारों को दूर करने वाला प्रमुख वृक्ष है। यह एक सर्वश्रेष्ठ वृक्ष है। सीता मैया ने अशोक वाटिका में अशोक वृक्ष के नीचे लगातार बैठकर इतनी शक्ति प्राप्त कर ली थी कि वो रावण जैसे राक्षस को भी वश में करके शोक रहित हो गई थी। यह सदाबहार वृक्ष है कभी पत्तो के रहित नहीं रहता है एवं छाया प्रदान करता है।

बरगद / बड़ - **बरगद के वृक्ष पर ब्रह्मा जी का निवास माना गया है।** बरगद के पेड़ से

कफ, वात, पित्त दोष ठीक किया जा सकता है। स्त्रियो के श्वेत प्रदर, रक्त प्रदर तथा पुरूषों के स्वप्न दोष प्रमेह अर्थात धातु संबंधी सभी रोगो को दूर करने के लिए यह रामबाण औषधि है। बन्धया को संतान का सुख प्राप्त होता है इसके उपयोग से उसका जीवन स्वर्ग समान हो जाता है। बड़ का दूध बहुत बलदायी होता है, इसके सेवन से शरीर का कायाकल्प हो जाता है। जीवन शक्ति में वृद्धि होती है।

पर्यावरण महत्व के रूप में इन वृक्षों पर फल उपलब्ध होने से पक्षियों एवं अन्य जीव जंतुओं को निरंतर भोजन उपलब्ध रहता है। पक्षियों के घोंसला बनाने के लिए उपयुक्त रहते हैं, वे इन पर स्थायी निवास कर सकते हैं। शुद्व वातावरण बना रहता है जिससे हम स्वस्थ जीवन जीते हैं। जलवायु के लिए भी वृक्षों का महत्वपूर्ण स्थान होता है।

पंचवटी के अलावा भी सभी वृक्षों एवं पौधों का अलग अलग महत्वपूर्ण स्थान होता है, उनको वास्तु शास्त्र के अनुसार उनकी सही दिशा में लगाकर बहुत शुभ फल प्राप्त किए जा सकते हैं । घर के अलावा इन वृक्षों और पौधों का महत्व व्यक्ति के कार्य क्षेत्र में भी बहुत है वहां भी अगर वास्तु के अनुसार छोटे पौधे लगाए जाएं तो कार्य क्षेत्र में काम करने वाले सब पर उसका प्रभाव पड़ता है जिससे कार्य क्षेत्र में प्रगति होती है।

- मेघना शुक्ला जी, इंदौर (म. प्र.)

डाकिया डाक लाया...

आता नही डाकिया अब, लेकर चिट्ठी कोई।
अहसासों को हाथों से समेटकर,
लिफाफे में भरता न कोई।

लाल डिब्बा भर जाता था तरह- तरह की बातों से,
आजकल लाल डिब्बे को खोजता न कोई।

उम्मीद और इंतजार की टकटकी
लगाता न कोई,
आता नही डाकिया अब, लेकर चिट्ठी कोई।

सालो संभालते हम इन चिट्ठियों को,
डिलीट का ऑप्शन होता न कोई।
कई-कई बार पढ़ते एक चिट्ठी को,
मन को भाती जैसी चिट्ठियां,
वैसे भाता न कोई।

खुशियो के दरवाजे को खटखटाता न कोई,
आता नही डाकिया अब, लेकर चिट्ठी कोई।

मन की मेमोरी ऐसी भरता न कोई।
कभी खुशियो की सौगात,
तो कभी मन की बात,
आजकल सुनाता न कोई।

आता नही डाकिया अब, लेकर चिट्ठी कोई।

- संगीता दरक जी, मनासा (म. प्र.)

"खो गयी वो......"**चिठ्ठियाँ**"...
जिसमें "**लिखने के सलीके**" छुपे होते थे
"**कुशलता**" की कामना से शुरू होते थे
बडों के "**चरण स्पर्श**" पर खत्म होते थे...!!

"और बीच में लिखी होती थी "**जिंदगी**"

नन्हें के आने की "**खबर**"
"**माँ**" की तबियत का दर्द
और पैसे भेजने का "**अनुनय**"
"फसलों" के खराब होने की वजह...!!

कितना कुछ सिमट जाता था एक
"नीले से कागज में"...

जिसे नवयौवना भाग कर "**सीने**" से लगाती
और "**अकेले**" में आंखो से आंसू बहाती!

"माँ" की आस थी "**पिता**" का संबल थी
बच्चों का भविष्य थी और
गाँव का गौरव थी ये "**चिठ्ठियां**"

"**डाकिया चिठ्ठी**" लायेगा कोई बाँछकर सुनायेगा
देख देख चिठ्ठी को कई कई बार छू कर चिठ्ठी
को अनपढ भी "**एहसासों**" को पढ़ लेते थे...!!

अब तो "**स्क्रीन**" पर अंगूठा दौडता हैं
और अक्सर ही दिल तोडता है
"**मोबाइल**" का स्पेस भर जाए तो
सब कुछ दो मिनट में "**डिलीट**" होता है...!!

सब कुछ "**सिमट**" गया है 6 इंच में
जैसे "**मकान**" सिमट गए फ्लैटों में
जज्बात सिमट गए "**मैसेजों**" में
"**चूल्हे**" सिमट गए गैसों में...!!

- विकास बंसल विक्की जी हावड़ा

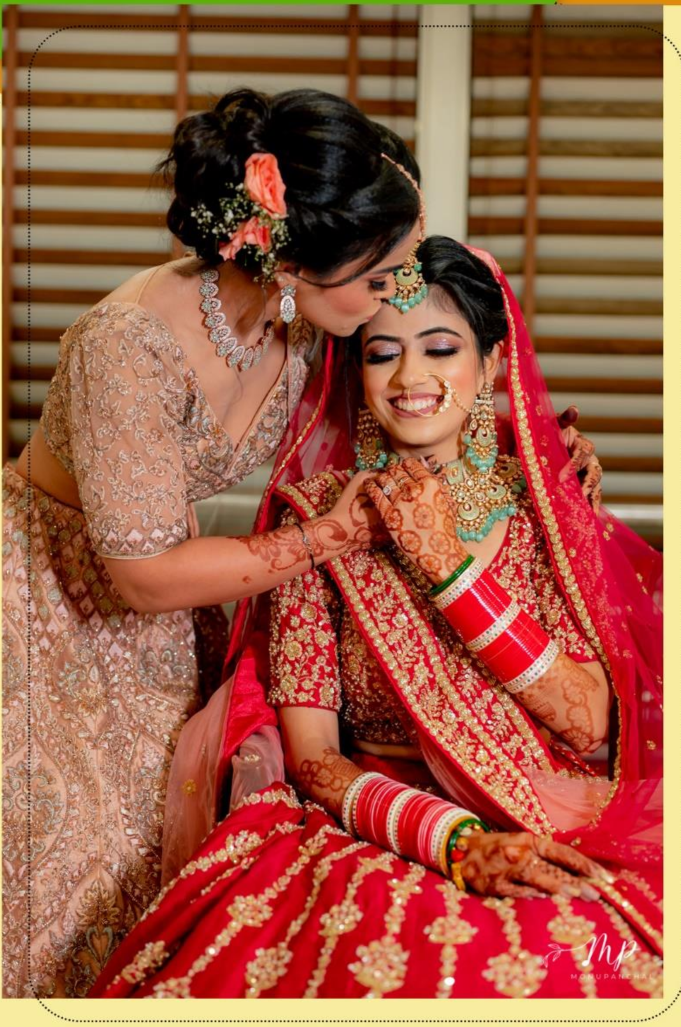

लघुकथा - आभुषण

दुल्हन का लिबास पहने जैसे ही दर्पण में आभा अपना प्रतिबिंब निहार रही थी तभी माँ ने कमरे में प्रवेश किया। आभा तुनक कर माँ से कहने लगी "घाघरे का यह रंग तो मुझे पसंद ही नहीं आया माँ, देखो न यह मुझपर जरा भी नहीं फब रहा और यह ज्वेलरी भी"... ओह! कितना पुराना फैशन। आजकल शादी का जोड़ा सब लड़कियां अपनी पसंद से ही लेती है। पता नहीं राहुल के घरवाले किस जमाने में जी रहे हैं।

माँ ने आभा **को प्यार से गले लगाया और समझाने लगी बेटी हर घर का अलग अलग रिवाज होता है, और खूबसूरती पहनावे से या दिखने भर से नहीं आती, वह आती है हमारे आचरण और व्यवहार से। बेटी विवाह उपरांत तुम्हें अपने भीतर बहुत से बदलाव लाने होंगे।**

अपनी वाणी को संयमित रखकर चलना होगा, शब्दों के तीर गहरी वेदना देते है और जब दर्द भरी आहें निकलती है तो उसका नकारात्मक प्रभाव कब किस रूप में हमें घेर लेता है हम समझ नहीं पाते। हर परिस्थिति का सामना हँसते हुए करना मुस्कान से बढ़कर कोई आभूषण नहीं है। यह आभूषण हमारी खूबसूरती में चार चाँद लगा देता है बेटी।

मीठी वाणी से हम सभी के दिलो पर राज करने में कामयाब हो सकते हैं। अब किस राह चलना सही रहेगा सफर तुम्हारा है तय तुम्हे करना है। आभा खिलखिलाते हुए मां से लिपट गई और शरारती अंदाज में कहने लगी, माँ आप ही तो मेरा गुगल मैप हो जो रास्ता आप बताओगी मुझे तो उसी पर चलना होगा। तभी ढोल की आवाज कानों में पड़ी माँ ने डबडबाई आँखों से बेटी को आशीर्वाद दिया लिबास तो वहीं था पर आभा को अब दर्पण में अपना प्रतिबिंब खूबसूरत नजर आ रहा था।

- राजश्री राठी जी, अकोला (महाराष्ट्र)

भारतीय परम्परा

की मासिक ई-पत्रिका
के पुराने सभी अंकों को
देखने के लिए किताब के
आइकन पर स्पर्श करें !

पारंपरिक व्यंजन
क्रीमी ऑरेंज डीलाईट

सामग्री - 3 संतरे, 2 बड़े चम्मच चीनी, एक बड़ा चम्मच पानी, 2 छोटे चम्मच जिलेटिन, 2 बड़े चम्मच पानी (अतिरिक्त), 3/4 कप ठंडा दूध, आधा सेब कटा हुआ। सजाने के लिए चेरी और सिल्वर बॉल्स, क्रीम।

विधि - 2 संतरों का रस निकाल ले। चीनी, पानी और रस किसी बर्तन में अच्छे से मिला ले। अतिरिक्त पानी में जिलेटिन मिला ले। धीमी आंच पर हिलाते हुए गर्म करें। आंच से उतारकर रस वाला मिश्रण भी उसी में मिला दे। धीरे-धीरे ठंडा दूध भी मिला दे। एक संतरे की फांके व सेब छीलकर छोटी-छोटी फांकें काटकर मिश्रण में मिला दे। सर्विंग प्लेट में डालकर फ्रिजर में सेट होने के लिए रख दे। सिल्वर बॉल्स व चेरी लगाकर क्रीम ऊपर से डालकर खाएं।

रसोई युक्तियाँ –

१) सब्जियों के डंठल में काफी पोषक तत्व होते हैं। जैसे गोभी का डंठल, हरी पत्तियों के डंठल उन्हें फेंके नहीं, अपितु सब्जी के साथ इस्तेमाल करें या फिर सुप में इस्तेमाल करें। इससे हड्डियां मजबूत होती है।
२) सूखे हुए मोटे अनाज जैसे राजमा, चना, मूंग, मोठ, चावल, मटर आदि को जिस पानी में भिगोकर रखा गया हो उस पानी को फेंकने की बजाय उसी में उन्हें पकाएं ताकि पानी में उतरे पोषक तत्व व्यर्थ में ना चले जाए।
३) उबले हुए मोटे अनाज के पानी में थोड़ा सा नींबू, नमक और घी डालकर गरम-गरम पी ले। इसके अंदर पौष्टिक तत्व भरपूर रहते हैं और विटामिन 12 प्रचुर मात्रा में रहता है।
४) आलू की सब्जी उसके छिलके सहित बनाए। विटामिन सी की अधिक मात्रा इसके छिलके में होती है।

घरेलू नुस्खे -

1. पेशाब में जलन हो या कम मात्रा में पेशाब आती हो तो एक कप ककड़ी के रस में एक चम्मच धनिया का चूर्ण मिलाकर दिन में 2-3 बार पीने से लाभ होता है।
2. आँख आई हो, उसमें लाली हो या अधिक जागने के कारण अथवा बारीक काम करने से आँखों में थकान आ गई हो तो ककड़ी को पीसकर उसका गूदा आँखों पर रखें। नेत्र विकार के लिए बहुत ही उपयोगी है ककड़ी।
3. शरीर में जलन हो रही हो या त्वचा लाल हो गई हो तो उसमें ककड़ी खाने तथा ककड़ी को पीसकर शरीर पर लगाने से जलन में राहत मिलती है।
4. बार-बार प्यास लगती हो तो तथा पानी पीने से भी प्यास शांत ना होती हो तो, ककड़ी के 100 ग्राम रस में दो चम्मच शक्कर मिलाकर दिन में 2-3 बार पीने से आराम मिलता है।

विविधा कुकिंग क्लासेस, पूनम राठी जी, नागपुर

सनातन धर्म प्रश्नोत्तरी
महाभारत

क्रमांक-5

52. देवर्षि नारद ने पांडवों को सुन्द-उपसुन्द दैत्य की कथा क्यों सुनाई...?
- सुन्द-उपसुन्द दैत्यों को वरदान था कि वे केवल एक-दूसरे के हाथों ही मारे जायेंगे। घनिष्ठ आपसी प्रेम वाले इन दैत्यों में अनुपम सुन्दरी, तिलोत्तमा के कारण फूट पड़ गयी और दोनों आपस में लड़-झगड़ कर मर गये। इस कथा के माध्यम से देवर्षि ने पांडवों को समझाया कि उन्हें भी अपनी दिनचर्या व जीवन चर्या में नियम बना लेना चाहिए ताकि द्रोपदी के कारण उनका विनाश न हो।

53. द्रौपदी के कारण पांडवों में आपस में फूट न पड़े इस बाबत क्या नियम बनाया गया...?
- देवर्षि नारद के मार्गदर्शन पर पांडवों ने यह नियम बनाया कि जब एक भाई द्रोपदी के साथ एकांतवास में होगा तो दूसरा भाई वहां नहीं जायेगा; इस नियम का उल्लंघनकर्ता को बारह वर्ष वनवास में रहना पड़ेगा।

54. इस नियम का उल्लंघन कितने भाइयों द्वारा कितनी बार किया गया...?
- इस नियम का उल्लंघन केवल एक भाई, अर्जुन द्वारा, एक बार ही किया गया।

55. नियम उल्लंघन की क्या वजह थी...?
- एक बार एक ब्राह्मण ने राजदरबार में आकर अर्जुन से गुहार लगायी कि लुटेरें उसकी गायों को लूट कर ले जा रहे है, आप मेरे गोधन की रक्षा करे। उस समय आयुध कक्ष में युधिष्ठिर द्रौपदी के साथ बैठे हुए थे। अर्जुन धर्म संकट में आ गये। एक तरफ राजधर्म तो दूसरी ओर कौटुम्बिक नियम। अर्जुन ने अपने राजधर्म को प्राथमिकता दी। तत्पश्चात नियम भंग के प्रायश्चित स्वरूप बारह वर्ष के लिए वनवास की दीक्षा भी ली।

56. उलूपी कौन थी...?
- उलूपी एक नागकन्या थी। वनवास के दौरान अर्जुन जब गंगा स्नान कर रहे थे तो नागकन्या उसे नागलोक में खींच ले गयी। नागलोक में अर्जुन व उलूपी के विवाह के पश्चात उलूपी ने अर्जुन को वर दिया कि किसी भी जलचर प्राणी से आपको भय नहीं होगा। सभी जलचर आपके अधीन होंगे।

57. चित्रांगदा कौन थी...?
- मणिपुर राज्य के राजा चित्र वाहन की पुत्री थी। वनवास अवधि के दौरान जब अर्जुन यात्रा करते हुए मणिपुर राज्य पहुंचे तो महाराज ने परिचय प्राप्त करने के पश्चात अपनी पुत्री चित्रांगदा का विवाह अर्जुन से किया। अर्जुन ने वहां पर एक साल तक वास किया। कालांतर में अर्जुन का पुत्र, बभ्रुवाहन ही मणिपुर राज्य का राजा बना।

58. सुभद्रा कौन थी...?

- भगवान कृष्ण की बहन व अर्जुन की पत्नी। अर्जुन ने उस काल में प्रचलित प्रथा के अनुसार सुभद्रा का हरण कर उससे विवाह किया था। चूंकि अर्जुन एक योग्य राजपुरुष था इस कारण सुभद्रा हरण में श्रीकृष्ण की मौन सहमति थी।

59. अभिमन्यु कौन था...?

- अभिमन्यु अर्जुन व देवी सुभद्रा का पुत्र था। अभिमन्यु ने धनुर्वेद की शिक्षा अपने पिता से प्राप्त की थी। पाण्डव पक्ष में अर्जुन के अलावा केवल अभिमन्यु ही **"चक्रव्यूह"** को भेदना जानता था। कुरुक्षेत्र युद्ध के तेरहवें दिन चक्रव्यूह को भेदने पर इस वीर योद्धा को अनेक कौरव योद्धाओं द्वारा घेरकर एक साथ वार कर अधर्म व अनीतिपूर्ण तरीके से मार दिया। ज्ञातव्य रहे कि अभिमन्यु चक्रव्यूह को केवल भेदना जानता था उससे बाहर निकलना नहीं, इस कारण वह विपक्षी योद्धाओं द्वारा घेर लिया गया।

60. पांडवों के और कितने पुत्र थे...?

- अभिमन्यु के अलावा **युधिष्ठिर व देवी द्रौपदी से "प्रतिविन्ध्य", भीमसेन व देवी द्रौपदी से "सुतसोम", अर्जुन व देवी द्रौपदी से "श्रुतकर्मा", नकुल व देवी द्रौपदी से "शतानीक"; तथा सहदेव व देवी द्रौपदी से "श्रुतसेन"; पुत्र हुए।** महाभारत युद्ध की समाप्ति के पश्चात अश्वत्थामा द्वारा रात्रि के समय पांडव शिविर में घुस कर पांचों पांडवों के भ्रम में इन पांचों राजकुमारों की हत्या कर दी जाती है।

61. मय दानव कौन था...?

- मय दानव, को दानवों का शिल्पी माना जाता है। खाण्डव वन दहन के समय अर्जुन ने मय दानव की प्राण रक्षा की थी। प्रति उपकार स्वरूप मय दानव ने पांडवों के लिये दिव्य राज्यसभा का निर्माण किया। मणि-माणिक्य व कीमती पत्थरों से निर्मित राज्यसभा का शिल्प कौशल अद्भुत था। सरोवर में पत्थर व पत्थर में जल का आभास होता था। राजसूय यज्ञ के दौरान दुर्योधन जल को पत्थर समझ कर पानी में गिर पड़ा और उस समय हुए उपहास के कारण वह जीवंत पर्यंत प्रतिशोध की अग्नि में जलता रहा।

62. जरासन्ध कौन था...?

- मगध देश के राजा बृहद्रथ का पुत्र था। महात्मा चण्डकौशिक की शरण में जाने पर सन्तानहीन बृहद्रथ को, पुत्र प्राप्ति के लिए एक फल दिया गया। राजा ने उसे काटकर अपनी दोनों रानियों को दे दिया। दोनों रानियों के आधे-आधे तन के पुत्र हुए। तन के टुकड़ों को महल से बाहर फिकवाने पर जरा नामक राक्षसी ने, खाने के उद्देश्य से जब दोनों तनों को आपस में जोड़ा तो वह बालक के रूप में किलकारियां भरने लगा। राक्षसी ने वह बालक राजा को सौंप दिया। जो कालांतर में बलशाली व निर्दयी राजा, जरासंध बना।

63. जरासंध का वध कैसे हुआ...?

- भीमसेन द्वारा जरासंध को मल्ल युद्ध के लिये ललकारा गया। तेरह दिनों तक दिन-रात तक युद्ध चलता रहा, चौदहवें दिन भीमसेन द्वारा उसके एक पैर को अपने पैर से दबाकर और दूसरे पैर को हाथों से खींच कर, तन को दो खंडों में चीर कर जरासंध का वध कर दिया।
(क्रमश:........, अगले माह)

- **माणक चन्द सुथार जी, बीकानेर(राज.)**

हंसी-खुशी के पल

टमाटर और आम
पहले हरे होते है फिर
उन्हें गुस्सा आ जाता है
तो वो लाल-पीले हो
जाते है....!

कहते हैं कि जो
सोवत है वो खोवत है,
पर जो जागत है वो
कौन से पावत है??
मोबाइल ही
तो चलावत है....!

इतिहास गवाह है
आज तक किसी को
ये पता नहीं चला है कि
हिंदी को अंग्रेजी
में क्या कहते है...!

जब मां मोबाइल रखने
को कहे तो रख
देना चाहिए, क्योंकि
मां के पैरों में जन्नत
के अलावा चप्पल
भी होती है...!

मैं क्यों दुआ करु कि
किसी को मेरी उम्र लग जाये,
हो सकता है आज ही
मेरा आखिरी दिन हो,
और उसकी भी वाट
लग जाए...!

पहले लोग बातों से
एक दूसरों को ताना मारते थे,
अब सुविचार और स्टेटस
से ही अपना काम
निपटा लेते है...!

सफला एकादशी

सफला एकादशी भारतीय संस्कृति में हिंदू धर्म और उसमें निहित व्रतों का एक महत्वपूर्ण स्थान है। व्रत का विधान, व्रत के पीछे की कथा, व्रत का उद्देश्य, व्रत में करणी कार्य तथा व्रत में निषिद्ध कार्यों के बारे में जानकारी हमें अपने धार्मिक ग्रंथों से प्राप्त होती। व्रतों में एकादशी व्रत का अपना एक विशेष महत्व यही कारण है कि हिंदू धर्मी बड़ी श्रद्धा और निष्ठा के साथ एकादशी का व्रत करते हैं।

एकादशी एक देवी थी, जो भगवान विष्णु के द्वारा उत्पन्न की गई थी।

भगवान विष्णु के प्रकट करने के कारण ही एकादशी व्रत में भगवान विष्णु की पूजा होती है। वैसे तो एकादशी एक वर्ष में 24 होती लेकिन जिस साल मलमास होता है उस वर्ष 26 एकादशी हो जाती हैं। एक माह में दो एकादशी होती है एक अमावस्या के बाद तथा एक पूर्णिमा के बाद।

पद्म पुराण में पौष मास में कृष्ण पक्ष की एकादशी को सुफला एकादशी कहते हैं। सुफला एकादशी के बारे में कहा जाता है बड़े-बड़े यज्ञों को करने से इतना पुण्य प्राप्त नहीं होता जितना के सुफला एकादशी का व्रत करने से पूर्ण लाभ होता है। इसलिए सुफला एकादशी का व्रत बड़ी श्रद्धा और विश्वास से लोग करते हैं।

व्रत की विधि - सुफला एकादशी में भगवान विष्णु नारायण की तथा माता लक्ष्मी की पूजा की जाती है।
- सर्वप्रथम दशमी तिथि के दिन शुद्ध एवं सात्विक भोजन किया जाता है भोजन अथवा आहार एक समय लेना चाहिए।
- एकादशी के दिन प्रातः काल स्नान कर स्वच्छ एवं शुद्ध वस्त्र धारण करें।
- एक चौकी में चौकी पर लाल कपड़ा बिछा कर उस पर भगवान स्थापित करें।
- उसके बाद पूजन की प्रक्रिया प्रारंभ करें। माथे पर गोपी चंदन लगाकर भगवान विष्णु की पूजा की जाती है, जिससे कि लोगों का कल्याण होता है समस्त व्रतों में सर्वश्रेष्ठ व्रत है।
- भगवान श्री हरि के विभिन्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए ऋतु फलों के द्वारा पूजन किया जाता है। **मंत्र - ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मीवासुदेवाय नमः।**
- कमल अथवा बैजंती फूल, फल, गंगाजल, पंचामृत, धूप दीप सहित पूजा कर आरती करें।
- एकादशी में संध्याकाल को आरती के बाद दीप दान करना आवश्यक होता है।
- संध्याकाल को दीपदान करने के बाद फलाहार ग्रहण करें। फलाहार में दूध गाय का लें तथा साबूदाने का प्रयोग ना करें।

- रात में कीर्तन कर जागरण किया जाता है, जागरण करने से हजारों वर्षों के तप का फल प्राप्त होता है।
- दूसरे दिन अर्थात द्वादशी के दिन ब्राह्मण को भोजन करा कर तथा दक्षिणा देने के बाद स्वयं भोजन कर व्रत का पारायण करें।

महत्व - पुराणों के अनुसार एकादशी को "हरि वासर या हरी दिन" भी कहते हैं। यह व्रत वैष्णव तथा गैर वैष्णव दोनों करते। एकादशी का व्रत यज्ञ वैदिक कर्मकांड से अधिक फल देता है स्कंद पुराण में इसके बारे में विस्तृत वर्णन किया गया है। माना जाता है कि इस व्रत को करने से सुखी जीवन के बारे में देखे गए स्वप्न पूर्ण होते।

भगवान श्री कृष्ण ने युधिष्ठिर से ही इसकी महिमा का वर्णन किया था। सुफला एकादशी का व्रत मनोरथ पूर्ण करने वाला है। पद्म पुराण के उत्तरखंड में उल्लेखित है एकादशी के व्रत के प्रभाव से पापा चारी लुम्भकभव के बंधन समाप्त हुए और वह मुक्त हुआ था।

निषेध कार्य -
- इस दिन शाम को सोना नहीं चाहिए।
- लड़ाई झगड़ा या क्रोध ना करें, मांसाहार से दूर रहे, चावल का सेवन वर्जित है।
- किसी का दिया हुआ अन्न न खाएं।
- फलाहार में गोभी शलजम पालक का सेवन ना करें।
- ब्रह्मचर्य का पालन करें।
- सुबह दातुन का इस्तेमाल ना करें इसके स्थान पर नींबू या जामुन या आम के पत्ते चबाकर उंगली से दांत साफ करें।

उपर्युक्त विधान से जो इस व्रत को करता है उसको राजसुर्य यज्ञ के समान फल प्राप्त होता। जीवन में उत्तम फल प्राप्त होता है अंत में मानव बैकुंठ को जाता है।

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी जी, भोपाल (म. प्र.)

जीवन एक संघर्ष

जीवन एक संघर्ष है चलता ही रहेगा
चलता रहेगा चलता ही रहेगा
दुख आते हैं सुख भी आयेंगे
दुख के बादल छंट जायेंगे
नया सवेरा आयेगा, एक नयी किरण को लायेगा
जीवन के अंधियारे को एक पल में दूर कर जायेगा
जीवन रहेगा
चलता रहेगा
आज हार हुई है तो कल जीत भी होगी
खुशियों की एक दिन, बौछार भी होगी
जो तुम जीत गये तो, अभिमान न करना
और गर हार गये तो, फिर गुमान न करना
जीवन रहेगा
चलता रहेगा
नन्हीं चींटी देखो कैसे अपनी मंजिल पाती है
बार-बार गिरकर भी देखो फिर ऊपर चढ़ जाती हैं
अपने हौसलों को भी हमें,यूं ही मजबूत बनाना है
असफलता ही सफलता की सीढ़ी है,
इसे कभी नहीं भुलाना है
जीवन रहेगा
चलता रहेगा ...!!

- N.M.

जन्म दिवस

25 दिसम्बर

मैं हिन्दू परम्परा में
गर्व महसूस करता हूं
लेकिन
मुझे भारतीय परम्परा में
और ज्यादा गर्व है !!

– अटल बिहारी जी वाजपयी

आदरणीय जन,

भारतीय परम्परा की पत्रिका को इतना सम्मान देने के लिए आप सभी का आभार।

"महाभारत के प्रश्न-उत्तर" को बहुत पाठकों ने सराहा है, इससे अपना ज्ञान तो बढ़ा ही है, साथ ही परिवारजन और बच्चों को भी बताये जाने से उनके ज्ञान में भी वृद्धि हुई है। इसी कड़ी में हम आगे महान लोगों की जीवनी भी जोड़ेंगे।

प्रश्नोत्तरी का भाग शुरू करने का विचार है, जिसमें आप सभी भाग ले सकते है। भारतीय परम्परा से जुडे कुछ प्रश्न पत्रिका में पूछे जायेंगे जिनका जवाब आप मैसेज, मेल, व्हाट्सअप और फेसबुक पर दे सकते है।
सही जवाब देने वाले पहले 10 लोगों का नाम अगले माह की पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा।

क्या यह भाग शुरू करना चाहिए ?? आपके सुझावो से अवगत जरूर कराये।

बहुत बहुत आभार,
संपादक - भारतीय परम्परा
संपर्क सूत्र - paramparabhartiya@gmail.com

जरूरी सूचना

भारतीय परम्परा

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

MERRY CHRISTMAS 2023

HAPPY NEW YEAR

हार्दिक आभार

www.bhartiyaparampara.com